ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करतीं सखी मंडल की दीदियां

सखी मंडल की दीदियां ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान कर रही हैं. महिला समूह से जुड़ कर व प्रशिक्षण पाकर ग्रामीण महिलाएं अब काफी आगे निकल गयी हैं. महिला समूहों से मिले प्रशिक्षण का लाभ उठाकर और कम ब्याज में मिलने वाले लोन का फायदा अब गांवों में दिखने लगा है. ग्रामीण महिलाएं अब स्वावलंबी हो रही हैं. घर का पूरा खर्च निकाल रही हैं. बच्चों की अच्छी शिक्षा देने के लिए महिलाएं अपना पूरा योगदान दे रही हैं. मुर्गी पालन से लेकर बकरी पालन तक में महिलाएं धीरे-धीरे अपना स्थान बना रही हैं. पशु सखी बनकर महिलाओं ने गांवों में पशु मृत्यु दर में काफी हद तक ब्रेक लगाया है. इससे ग्रामीण पशुपालकों को आर्थिक तौर पर लाभ मिल रहा है. घर और समाज से शराब जैसी बुराई को खत्म करने के लिए महिलाएं अपनी आवाज बुलंद कर रही हैं. शराब बनाने की बजाय महिलाओं को दूसरा रोजगार करने के लिए भी जागरूक किया जा रहा है.

सखी मंडल का कार्य देख खुश हुए आइएएस अधिकारी

कर्नाटक से आये आइएएस अधिकारियों के साथ दीदियां.

कर्नाटक से आये आइएएस अधिकारियों ने रांची के अनगड़ा प्रखंड स्थित अनगड़ा कलस्टर और जीआरसी गेतलसूद का दौरा किया. कर्नाटक से आये इन अधिकारियों ने पहले अनगड़ा कलस्टर संबंधी विस्तार से जानकारी हासिल की. फिर पूरे कैडर से बात करनी शुरू की. आइसीआरपी पूनम देवी ने बताया कि उनकी जैसी बहुत आइसीआरपी महिलाएं हैं, जो गांवों में जाकर पहले आमसभा करती हैं. मुखिया और वार्ड सदस्य की निगरानी में आमसभा की जाती है. इसके बाद गांव में सखी मंडल बनाती हैं. खाता खुलवा कर एसएचजी प्रोफाइल भर कर पुस्तक संचालक को देती हैं. पुस्तक संचालक को पुस्तक लिखने का प्रशिक्षण भी दिया जाता है. फिर समूह की सारी महिलाएं जमा होती हैं. इस तरह से समूह बनाने का काम पूरा हो जाता है. इस काम के लिए आइसीआरपी को एक दिन के 500 रुपये मिलते हैं. सीनियर सीआरपी दमयंती देवी कहती हैं कि जब वो गांव में जाती हैं, तो सखी मंडल की महिलाओं के साथ मिल कर बैठक करती हैं. उन्हें ग्राम संगठन बनाने का तरीका, ग्राम संगठन बनने के लाभ, ग्राम संगठन चलाने का तरीका और इसके नियम के बारे में बताते हैं. इस कार्य के लिए सीनियर सीआरपी को 600 रुपये प्रतिदिन के हिसाब से दिये जाते हैं. सेतु दीदी जेवंती देवी ने बताया कि स्वच्छ भारत मिशन के तहत उन्होंने अब तक 500 शौचालयों का निर्माण कराया है. इतना ही नहीं, सभी 600 शौचालयों के इस्तेमाल के लिए भी लोगों को जागरूक किया गया है. टैबलेट दीदी बबली करमाली ने कहा कि टैबलेट मिलने से काम और आसान हो गया. उन्हें सखी मंडल के एक सप्ताह के डाटा इंट्री करने के एवज में 20 रुपये मिलते हैं. कर्नाटक की टीम के साथ ग्रामीण बैंक, जोन्हा के मैनेजर भी अनगड़ा कलस्टर पहुंचे और कहा कि सखी मंडल के साथ काम करने में बहुत खुशी मिल रही है. अनगड़ा कलस्टर में विजिट करने के बाद टीम गेतलसूद जीआरसी पहुंची. वहां पशु सखी बलमदीना ने बताया कि उनके जैसे 102 पशु सखी पूरे अनगड़ा प्रखंड में अपनी सेवाएं दे रही हैं. इसके कारण ही बकरियों की संख्या में काफी बढ़ोतरी हुई है.

रूबी खातून

प्रखंड : अनगड़ा
जिला : रांची

मुर्गीपालन कर अपनी तकदीर बदलतीं सुनैना देवी

सावित्री देवी

प्रखंड : सिल्ली
जिला : रांची

रांची जिले के सिल्ली प्रखंड स्थित नागोडीह गांव की सुनैना देवी मुर्गी पालन कर 15-20 हजार रुपये प्रतिमाह कमा रही हैं. पहले ऐसा नहीं था. घर का खर्च चलाने के लिए सुनैना को काफी जद्दोजहद करनी पड़ती थी. सुनैना और उनके पति दूसरों के खेतों में मजदूरी किया करते थे. गृहस्थी चलाने के लिए वो मेहनत-मजदूरी के साथ साल 2007 में स्वयं सहायता समूह से भी जुड़ीं. बदलाव साल 2015 में शुरू हुआ, जब सुनैना जेएसएलपीएस द्वारा बनाये गये समूह से जुड़ीं. झारखंड महिला समिति, आमटीकरा से जुड़ने के बाद सुनैना की जिंदगी में बदलाव आना शुरू हुआ. सुनैना बताती हैं कि वर्ष 2015 में उन्होंने समूह से पांच हजार रुपये का लोन लिया. इस राशि से उन्होंने मुर्गी पालन का कार्य शुरू किया. मुनाफा होने पर समूह से और 50 हजार रुपये का लोन लिया. सुनैना देवी के पास फिलहाल 1100 चूजे हैं. सुनैना देवी बताती हैं कि एक चूजा खरीदने में 35 रुपये लगते हैं, जो 35-40 दिनों में करीब दो किलो का हो जाता है. सुनैना को देखकर इस गांव में 10 अन्य महिलाओं ने भी मुर्गी पालन शुरू किया. मुर्गी पालन से होनेवाली कमाई से सुनैना ने अपने दोनों बच्चों को स्कूल भेजना शुरू किया. झारखंड की ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए राष्ट्रीय आजीविका मिशन के तहत महिलाओं को सखी मंडल से जोड़ कर छोटी-छोटी बचत और स्वरोजगार के लिए प्रेरित किया जा रहा है.

मुर्गी के चूजों को दिखातीं सुनैना देवी.

शराब के खिलाफ आवाज बुलंद कर रहीं महिलाएं

शराब के खिलाफ रैली निकालतीं महिलाएं.

झारखंड में चावल से बनी देसी शराब ने लोगों की जिंदगी को नरक बना दिया है. अब शराब से छुटकारा पाने के लिए सखी मंडल की महिलाओं ने सामूहिक रूप से आवाज उठाना शुरू कर दिया है. बोकारो जिला मुख्यालय से लगभग 45 किलोमीटर दूर चावलीबासा गांव में महिलाओं ने हाथ में शराब विरोधी नारे की तख्ती लेकर पूरे गांव में रैली निकाली. इन्होंने अपने गांव के पुरुषों को ये चेतावनी दी कि शराब पीना छोड़ कर कामकाज में ध्यान दें. एक बड़ी आबादी शराब की लत के कारण अपनी गाढ़ी कमाई बर्बाद कर रही है, जिसका खामियाजा उनके परिवार की महिलाएं और बच्चों को भुगतना पड़ रहा है. गढ़वा जिला मुख्यालय से लगभग 30 किलोमीटर दूर नगरउंटारी प्रखंड के सोनपुरा गांव की रहनेवाली खुशबू देवी बताती हैं कि जब वो ससुराल आयीं, तो देखा कि घर के कई सदस्य शराब का सेवन करते हैं. शराब की रोकथाम के लिए घरवालों को कई बार समझाया. पहले तो नहीं माने, पर बार-बार समझाने और उससे होनेवाले नुकसान को बताने पर घरवाले मान गये. तब खुशबू ने अपने घर का खर्च चलाने का जिम्मा लिया. खुशबू देवी की तरह सैकड़ों महिलाएं आगे आ रही हैं और समूह बनाकर अपने गांव में शराब का विरोध कर रही हैं. सखी मंडल से जुड़ीं 98 महिलाओं ने आरा व केरम गांव को नशामुक्त कर दिया है, जो राज्य का पहला आदर्श नशामुक्त गांव बना है. इस गांव को देखकर मुख्यमंत्री ने कहा है कि इस गांव की तर्ज पर राज्य में एक हजार नशामक्त गांव बनेंगे. कुछ महीने पहले हड़िया पीने से सिमडेगा जिले के ठेठईटांगर प्रखंड के केरेया घाटतरी गांव में आधा दर्जन से अधिक लोगों की मौत हो गयी थी. इसके बावजूद स्थानीय हाट बाजार में आज भी हड़िया खुलेआम बिक रही है. यहां तक की राजधानी रांची के कई इलाकों में भी सुबह-शाम सड़क किनारे हड़िया बिकती है. बिहार में दो साल की शराबबंदी के बाद महिलाएं काफी खुश हैं. डेवलपमेंट मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट, पटना के अध्ययन के मुताबिक शराबबंद होने से दूध, लस्सी और दूध से बनी चीजों की मांग बढ़ी है. वर्ष 2016-17 में दूध की बिक्री में 17.5 फीसदी का इजाफा हुआ, जबकि कपड़ों की खरीद में 96 फीसदी की बढ़त हुई थी.

हिमानी महतो

प्रखंड : चांडिल
जिला : सरायकेला

समूह से जिंदगी बनी आसान

आशा तिग्गा

प्रखंड : मनोहरपुर
जिला : पश्चिमी सिंहभूम

पश्चिमी सिंहभूम जिला अंतर्गत मनोहरपुर प्रखंड की छोटनागरा पंचायत की सुखमति केसरी आज खुशहाल जिंदगी जी रही हैं. चार साल पहले सुखमति विकास स्वयं सहायता से जुड़ी थीं. समूह से जुड़ने से पहले सुखमति परिवार चलाने के लिए बाजार में सब्जी बेचा करती थीं. इससे मुनाफा नहीं हो पाता था. इस बीच सुखमति को महिला समूह के बारे में जानकारी मिली. पांच दिवसीय प्रशिक्षण लेने के बाद सखी मंडल में शामिल हो गयीं. समूह में बचत करने और समूह से मिलनेवाले लोन के बारे में पूरी जानकारी प्रशिक्षण के दौरान सुखमति को मिली. समूह से जुड़ने के बाद उन्होंने सबसे पहले पांच हजार रुपये का छोटा लोन लिया और सब्जी की खेती में लगाया. इस लोन को चुकाने के बाद सुखमति ने 50 हजार रूपये का एक और लोन लिया. इस राशि से सुखमति ने पॉल्ट्री व्यवसाय की शुरुआत की. हफ्ते में तीन दिन पॉल्ट्री खरीद कर उसे बेचती हैं. इससे उन्हें काफी फायदा हुआ. 50 हजार का लोन चुकाने के बाद सुखमति ने एक लाख रुपये का लोन लिया और टाटा मैजिक वाहन खरीदा. इससे उन्हें अच्छी आमदनी हो रही है. गाड़ी हो जाने के कारण उनके पति और बेटे को भी रोजगार मिल रहा है.

ग्राम संगठन की सभा में शामिल हुईं महिलाएं

अमिता देवी

प्रखंड : रनिया
जिला : खूंटी

खूंटी जिला के रनिया प्रखंड की जयपुर पंचायत स्थित गढ़सिड़म गांव के ग्राम संगठन कार्यालय में महिला ग्रामसभा का आयोजन किया गया. ग्रामसभा में ग्राम संगठन के पदाधिकारी, वीओए और सखी मंडल की महिलाएं शामिल हुईं. ग्रामसभा में मौजूद एलआरजी सुनीता कंडुलना ने महिलाओं को ग्रामसभा के बारे में विस्तार से जानकारी दी. सुनीता ने बताया कि किस प्रकार समूह की महिलाएं अपने गांव और परिवार के विकास के लिए योजनाएं बना सकती हैं. योजना बनाकर कहां भेजना है. इसके बारे में भी महिलाओं को जानकारी दी गयी. विधवा और वृद्धा पेंशन का लाभ किस तरीके से लाभुकों को दिलाया जाये. किस प्रकार से योजना का लाभ पाने के लिए आवेदन देना है, इसकी भी जानकारी दी गयी. ग्रामसभा में महिलाओं ने फैसला किया कि मनरेगा, वृद्धा पेंशन, विधवा पेंशन और प्रधानमंत्री आवास योजना की रिपोर्ट तैयार कर ग्रामसभा में अपनी बात रखेंगी.

आर्थिक रूप से समृद्ध हुईं फैजान बीबी

ममता देवी

प्रखंड : मेदिनीनगर
जिला : पलामू

पलामू जिले के सतबरवा प्रखंड अंतर्गत धावाडीह गांव की रहनेवाली फैजान बीबी आज अपने परिवार के साथ खुशहाल जिंदगी जी रही हैं. वह आटा चक्की चलाती हैं. इससे अपने परिवार का खर्च निकाल रही हैं. पहले फैजान बीबी कपड़ा सिलाई का काम करती थीं और पति खेती-बारी का. इससे परिवार का खर्च चलाना काफी मुश्किल होता था. इस बीच फैजान बीबी को महिला समूह की जानकारी मिली. वर्ष 2014 में वह गांव में संचालित खुशबू आजीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ गयीं. समूह की गतिविधियों में सक्रिय रहने व कुछ करने की सोच से फैजान ने समूह से 90 हजार रुपये का लोन लिया. इस राशि से उन्होंने आटा चक्की की दुकान खोली. धीरे-धीरे आमदनी बढ़ने लगी. इसके बाद उन्होंने धान कूटने वाली मशीन खरीदी. इससे उन्हें और मुनाफा होने लगा. अब फैजान अपने बच्चों को अच्छे स्कूल में पढ़ा रही हैं. उन्हें महीने में पांच से आठ हजार रुपये की आमदनी हो जाती है. अच्छी कमाई होने के कारण उन्होंने अब तक 72 हजार रुपये का लोन भी चुका दिया है.

पशु सखियों को मिला प्रशिक्षण

मुनिया देवी

प्रखंड : डुमरी
जिला : गिरिडीह

गिरिडीह जिला अंतर्गत डुमरी प्रखंड की छछंदो और चैनपुर पंचायत में पशु सखी समेत अन्य सखी मंडल की सदस्यों को प्रशिक्षण दिया गया. इस दौरान गोट क्लब के द्वारा बकरियों के इलाज और उचित देख-रेख की जानकारी दी गयी और दवा का वितरण भी किया गया. बकरियों की उचित देखरेख, उनमें होनेवाली बीमारी और उसके इलाज के बारे में विस्तार से बताया गया. प्रशिक्षण के दौरान दो महिलाओं का चयन अध्यक्ष और सचिव के तौर पर किया गया. पशु सखी वीणा देवी ने बताया कि बकरी, बतख, सूकर, मुर्गी व अन्य पशुओं का इलाज करने के लिए दवा और टीकाकरण का इस्तेमाल करती हैं. बकरियों को एंटी टीकाकरण और पीपीआर, दो प्रकार का टीकाकरण किया जाता है. सतजोन टैबलेट भी बकरियों को दिया जाता है, जो कीड़ा मारने में काम आता है. इस दवा को सूर्योदय से पहले खिलाया जाता है और उसके दो घंटे बाद ही बकरियों को चारा दिया जाता है. अध्यक्ष गीता देवी कहती हैं कि जब से गांव में पशु सखी बकरी, मुर्गी, बतख का इलाज कर रही हैं, तब से गांव में पशु मृत्यु दर में कमी आयी है और पशुओं की संख्या बढ़ी है. सखी मंडल की महिलाएं पशु पालन करते हुए आर्थिक तौर पर समृद्ध हो रही हैं.